श्री अहोई अष्टमी व्रत कथा

एक समय की बात है कि एक स्त्री के सात पुत्र थे वह कार्तिक के महीने में दीपावली से पहले अपने मकान की लिपाई-पुताई करने के लिए मिट्टी लाने जंगल में गई। वह एक जगह से मिट्टी खोदने लगी, वहीं सेह की माँद थी। अचानक उसके हाथ से कुदाली सेह के बच्चे को लग गई और वह मर गया। यह देखकर स्त्री को दया आई पर क्या हो सकता था। वह दुःखी होती हुई मिट्टी ले आई, थोड़े दिनों बाद साल भर में हीं उसके सातों लड़के मर गए। तबसे वह दुःखी रहने लगी। एक दिन रोकर उसने बड़ी-बूढ़ीयों से कहा कि मैंने जान कर तो कोई पाप नहीं किया हाँ एक बार मिट्टी खोदते हुए अनजाने में सेह के बच्चे को कुदाली लग गई थी, उसके बाद साल भर में ही मेरे सातों पुत्र मर गये, उन स्त्रियों ने कहा कि तुमने ये बात चार के कान में डाल कर जो पश्चाताप् किया है इससे तुम्हारा आधा पाप धुल गया। अब तुम उसी अष्टमी भगवती के पास सेह और सेह के बच्चों के चित्र बना कर उसकी पूजा किया करो ईश्वर की दया से तुम्हारा पाप धुल जाएगा और तुम्हें फिर से पहले की तरह पुत्र प्राप्त होंगे। उस स्त्री ने आगामी कार्तिक कृष्ण अष्टमी का व्रत किया तब से लगातार उसी भाँति व्रत और पूजन करती रही। ईश्वर की कृपा से उसे फिर से सात पुत्र प्राप्त हुए। तभी से इस व्रत और पूजन की परम्परा चल पड़ी।